नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

एकल तबला वादन में बनारस घराने की अभिव्यक्ति में परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य

पंडित अरविंद कुमार आजाद

तालायन म्युज़िक सर्कल,
12, रजनीगंधा सोसायटी, डी ए वी स्कूल के सामने, औंध, पुणे

सार-संक्षेप

पंडित राम सहाय जी द्वारा प्रतिष्ठित बनारस घराना, एकल तबला-वादन के माध्यम से अपनी परंपरा एवं नूतनता में समन्वय स्थापित करता है। यह शोध-प्रबंध इस तथ्य का अन्वेषण करता है कि कैसे इस घराने की प्रतिष्ठित वादन-प्रणाली, जिसके अद्वितीय शब्दाक्षर एवं रचनाएँ वीर रस जैसे ओजपूर्ण भावों को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करती हैं, आज भी अपना मौलिक तेज अक्षुण्ण रखे हुए है। इस शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि इस पारंपरिक शैली को समकालीन संगीत-मंच पर किस प्रकार संरक्षित एवं प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके साथ ही, यह शोध घराने की आधुनिक सौंदर्य-चेतना का भी परीक्षण करता है। इसमें यह दर्शाया गया है कि कैसे सूक्ष्म एवं जटिल वादन-प्रणाली ने प्रस्तुति में लालित्य एवं माधुर्य की वृद्धि की है, जिससे श्रृंगार रस जैसे भावों का प्रकटीकरण होता है। पारंपरिक ओज एवं आधुनिक वादन की सूक्ष्मता के मध्य सामंजस्य का अध्ययन करके, यह पत्र स्थापित करता है कि बनारस घराना केवल अपने दाय का संरक्षक ही नहीं, अपितु एक जीवंत एवं विकासशील परंपरा है। इस प्रकार, एकल तबला-वादन एक ऐसा केंद्र बन गया है जहाँ अतीत के ओज और वर्तमान की कला-चेतना का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है, जो इस परंपरा को इक्कीसवीं शताब्दी में भी प्रासंगिक बनाए रखता है।

मुख्य शब्द : बनारस घराना, तबला, परंपरा, आधुनिकता, एकल प्रदर्शन, रस निर्मिती।

शोध-पत्र

बनारस, जिसे वाराणसी एवं अति-प्राचीन काल से काशी नाम से जाना जाता है, भारतीय सभ्यता की एक जीवंत चेतना है। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि इस भू-मंडल पर काशी को प्राचीनतम, निरंतर विद्यमान नगर होने का गौरव प्राप्त है। जब हम किसी नगर को प्राचीनतम कहते हैं, तो यह स्वाभाविक है कि अनेकों तत्वों का उद्‌गम एवं विकास भी इसी भूमि पर हुआ होगा। बनारस घराना, जो आज तबला वादन के लिए प्रतिष्ठित है, की एक गहन परंपरा रही है, यद्यपि एक घराने एवं उसकी विशिष्ट शैली के रूप में इस पर बहुत समय पश्चात विचार हुआ। इसका श्रेय पंडित राम सहाय जी को दिया जाता है, जो बनारस घराने के संस्थापक आचार्य रहे।

पंडित राम सहाय जी ने तबले की अपनी प्रारंभिक शिक्षा पारिवारिक परिवेश में ही अपने पिता, पंडित प्रकाश सहाय जी, एवं ताऊ पंडित प्रगास सहाय जी से अपनी आयु के दस से बारह वर्ष तक ग्रहण की। आगे चलकर, जैसा सर्वविदित है, उन्होंने लखनऊ घराने के प्रख्यात खलीफा उस्ताद मोदू खान का शिष्यत्व स्वीकार किया और उनसे विधिवत दीक्षा प्राप्त की। (मिश्र 267) कालांतर में जब वे बनारस लौटे, तो अपने गहन चिंतन एवं मनन द्वारा उन्होंने वादन-शैली में कुछ विशेष परिवर्तन किए, जो लखनऊ की शैली से पृथक प्रतीत होने लगी। इस प्रकार, एक नवीन शैली का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे आज बनारस घराने के नाम से जाना जाता है।

बनारस घराने की वादन-शैली को 'मुक्त बाज़' माना जाता है और इसे 'पूरब बाज़' की संज्ञा दी जाती है। इसके संस्थापक, पंडित राम सहाय जी ने अपने संपूर्ण जीवनकाल में केवल पांच शिष्यों को ही शिक्षा प्रदान की, किंतु उन्होंने पाँचों को पृथक-पृथक दीक्षा दी, जिसका विराट स्वरूप आज हम सबके समक्ष है। (मिश्र 40)

बनारस घराने को यह गौरव प्राप्त है कि यह न केवल तबले के घराने के रूप में प्रतिष्ठित है, अपितु भारतीय संगीत की एकमात्र ऐसी परंपरा है जो गायन, वादन एवं नृत्य, इन तीनों ही कला-क्षेत्रों में एक 'संपूर्ण घराने' के रूप में मान्य है।

शोध समस्या

यह शोध-प्रबंध इस गहन प्रश्न का समाधान प्रस्तुत करेगा कि बनारस घराना अपनी शताब्दियों की सुदीर्घ, ओजपूर्ण वादन-शैली एवं

समकालीन संगीत के नूतन सौंदर्य-बोध के मध्य संतुलन किस प्रकार स्थापित करता है। किसी भी जीवंत परंपरा का प्रवाह तभी अक्षुण्ण रहता है, जब उसमें समय की आवश्यकता के अनुरूप नूतन प्रयोगों का समावेश होता रहे, अन्यथा वह परंपरा शिथिल एवं गतिहीन हो जाती है। अतः, किसी भी घराने की समकालीन अभिव्यक्ति तभी संभव है, जब उसमें आधुनिकता का विवेकपूर्ण समन्वय हो। परंतु, यह समन्वय इस प्रकार होना चाहिए कि घराने की पारंपरिक रचनाओं ('बंदिशों') एवं उसकी शैलीगत भाषा की गरिमा और मर्यादा अक्षुण्ण रहे और उसका अतिक्रमण न हो।

शोध का उद्देश्य

इस शोध-प्रबंध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- बनारस घराने की पारंपरिक वादन-प्रणाली एवं उसकी ओजपूर्ण अभिव्यक्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत करना, विशेष रूप से वीर-रस के परिप्रेक्ष्य में (यथा- परन, पड़ाल एवं रेला जैसी रचनाएँ)।
- घराने की नूतन वादन-शैली में विकसित सूक्ष्मता एवं लालित्य का परीक्षण करना, विशेष रूप से श्रृंगार-रस के परिप्रेक्ष्य में।
- यह स्थापित करना कि ये दोनों प्रणालियाँ परस्पर विरोधी न होकर, एक-दूसरे की पूरक हैं और एक सामंजस्यपूर्ण प्रस्तुति को जन्म देती हैं।
- इस तथ्य का विश्लेषण करना कि समकालीन कलाकार अपने चिंतन-मनन के आधार पर बनारस की विशिष्ट रचनाओं (गत, परन, फर्द) में गणितीय-सौंदर्य एवं भाषा-सौंदर्य की संकल्पना को किस प्रकार समन्वित करते हैं।

शोध की प्रासंगिकता

तबले के अन्य घरानों की तुलना में, बनारस घराने की परंपरा, उसके वैशिष्ट्य, एवं उसके मौलिक स्वरूप में हुए समकालीन परिवर्तनों जैसे विषयों पर प्रामाणिक एवं शोध-पूर्ण प्रलेखों का अभाव है। लिखित सामग्री की यह सीमित उपलब्धता ही इस शोध-प्रबंध की प्रासंगिकता को स्थापित करती है। अतः इस अध्ययन का ध्येय, बनारस घराने की वर्तमान स्थिति का गहन विश्लेषण करते हुए, यह अन्वेषण करना है कि यह घराना अपनी सुदीर्घ परंपरा एवं नूतनता के मध्य किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर रहा है, और इस प्रक्रिया के भविष्य में क्या स्वरूप हो सकते हैं।

बनारस घराने की पारंपरिक नींव और शक्तिशाली अभिव्यक्ति

बनारस घराने की पारंपरिक नींव काशी की आध्यात्मिक भूमि एवं प्राचीन पखावज-वादन की ओजपूर्ण परंपरा में गहराई तक स्थापित है। काशी (बनारस) का सांस्कृतिक स्वरूप उसकी गहन आध्यात्मिकता से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यह नगर आदिकाल से ही धार्मिक आस्था और अनुष्ठानों का एक प्रमुख केंद्र रहा है, और यहाँ का संगीत भी इसी भक्तिपूर्ण वातावरण में विकसित हुआ। (मिश्र 53) तबले के प्रादुर्भाव और प्रचलन से बहुत पहले, काशी के संगीत-जगत पर जिस वाद्य का आधिपत्य था, वह पखावज था।

काशी के मंदिर और मठ संगीत के भी केंद्र थे, जहाँ ध्रुपद-धमार गायन और मंदिर संगीत का प्रचलन था। इस गंभीर और भक्तिपूर्ण संगीत के साथ संगत करने के लिए पखावज ही सबसे उपयुक्त वाद्य था क्योंकि इसकी ध्वनि गहरी, गूँजदार और ओजपूर्ण होती थी और इसके खुले बोल मंदिर के विशाल प्रांगण में एक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करते थे।

पारंपरिक वादन शैली के मूल तत्व

जब पंडित राम सहाय जी ने तबले पर बनारस घराने की शैली को आकार दिया, तो उन्होंने काशी की प्राचीन पखावज-वादन परंपरा को ही अपनी प्रेरणा का स्रोत बनाया। बनारस के तबले में आज भी जो गंभीरता और शक्ति सुनाई देती है, वह इसी पखावज परंपरा का एक परिष्कृत और विकसित स्वरूप है। इस प्रभाव के कारण, बनारस की वादन शैली 'खुला बाज़' कहलाई, जिसमें ध्वनि को दबाने के बजाय उसे खुलकर गूँजने दिया जाता है। (मिश्र 45)

इस शैली के मौलिक तत्व, जो इसकी सामूहिक पहचान हैं, निम्नलिखित हैं–

- **पखावज से प्रेरित बोल:** पखावज के प्रभाव के कारण 'तड़ान', 'धड़ान', 'कड़ान', और 'धुमकिटतकता' जैसे खुले और शक्तिशाली अक्षर यहाँ की रचनाओं में प्रमुखता से पाए जाते हैं।
- **'थाप' की तकनीक:** 'थाप' (खुली हथेली का प्रहार), जो पखावज का एक मूल गुणधर्म है, इस घराने की विशिष्ट तकनीक के रूप में आत्मसात की गई।
- **विशिष्ट शब्दाक्षर:** एक उंगली से 'नाधिनधिन्ना' बजाना और 'धिरकिट' या 'धरधिर' शब्द का विशेष प्रयोग इस घराने के मौलिक तत्वों में से है।
- **ऊर्जावान लयकारी:** यहाँ की लयकारी में अत्यधिक गति में भी प्रत्येक शब्दाक्षर की स्पष्टता और एक स्वाभाविक ऊर्जा विद्यमान रहती है।

अतः, इन सभी तत्वों का समन्वय ही बनारस घराने की पारंपरिक अभिव्यक्ति को एक विशिष्ट शक्ति, भव्यता और ओज प्रदान करता है। (मिश्र 50)

घराना एवं शैली: मूल्य-सापेक्षता और व्यक्ति-सापेक्षता का सिद्धांत

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'घराना' और 'शैली' की संकल्पना को समझना अत्यंत आवश्यक है। घराना मूल्य-सापेक्ष होता है; अर्थात, प्रत्येक घराने का अपना एक अनुशासन, अपनी विशिष्ट तकनीक और अपनी भाषा होती है जिसका पालन उस परंपरा के सभी कलाकार करते

हैं। इसके विपरीत, शैली व्यक्ति-सापेक्ष होती है; यह कलाकार का नितांत व्यक्तिगत विचार और उसकी अपनी प्रस्तुति की प्रणाली है।

इसी सिद्धांत के सबसे ज्वलंत उदाहरण एवं प्रत्यक्ष प्रमाण बनारस घराने के सुप्रतिष्ठित कलाकारों में दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि वे सभी एक ही घराने की शुद्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं, तथापि उनकी वादन-शैली में पृथकता स्पष्ट है। उदाहरणार्थ–

- पंडित अनोखेलाल मिश्र जी की शैली में बोलों का अद्वितीय निकास और उनका चयन परिलक्षित होता है, जो अन्य समकालीन कलाकारों से भिन्न थी।
- पंडित किशन महाराज जी की शैली में वीर एवं श्रृंगार रस की प्रचुरता के साथ-साथ लय पर उनका असाधारण अधिकार प्रकट होता है। वे कहते थे, "जब तक हम नहीं चाहेंगे... तब तक लय भी हिल नहीं सकती है।"
- पंडित सामता प्रसाद जी की शैली में नाद-सौंदर्य, बाएँ तबले का संतुलन और हाथ के रखरखाव (वजन) पर विशेष रूप से गहन चिंतन एवं प्रयोग दिखाई देता है।

अतः, प्रत्येक कलाकार अपने चिंतन-मनन से अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित करता है, जो एक ही घराने की छत्रछाया में रहते हुए भी उसकी अपनी व्यक्तिगत पहचान होती है। इसी सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए पंडित अनोखेलाल मिश्र जी, पंडित किशन महाराज जी, एवं पंडित सामता प्रसाद जी का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है, क्योंकि ये तीनों ही कलाकार शुद्ध बनारस बाज़ के प्रतिनिधि उदाहरण हैं, तथापि इन सभी ने अपनी एक पृथक, व्यक्तिगत शैली को प्रतिष्ठित किया।

पंडित राम सहाय जी द्वारा घराने की स्थापना और उनकी दूरदृष्टि

पंडित राम सहाय जी की असाधारण दूरदृष्टि केवल एक नवीन वादन-शैली की स्थापना तक ही सीमित नहीं थी, अपितु यह इस शैली को भविष्य में एक जीवंत, बहुआयामी और विकासशील परंपरा के रूप में स्थापित करने की गहन योजना में भी परिलक्षित होती है। इस कला के प्रति उनका समर्पण इतना गहन था कि उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया और अपनी कोई रक्त-संबंधी वंश परंपरा आगे नहीं बढ़ाई। उन्होंने अपने शिष्यों को ही पुत्रवत स्नेह दिया और उन्हीं में अपनी विद्या का दान किया।

उनकी इस दूरदृष्टि का सबसे बड़ा प्रमाण उनकी शिक्षण-प्रणाली में मिलता है, जिसके अंतर्गत उन्होंने केवल पांच शिष्यों को ही दीक्षित किया, किंतु उन सभी को पृथक-पृथक वादन-प्रणालियों की दीक्षा प्रदान की। (मिश्र 40) यह एक ऐसे कुशल माली का कार्य था जो एक ही उद्यान में विभिन्न प्रकार के पुष्पों का रोपण करता है, ताकि उस उद्यान की शोभा किसी एक ही रंग तक सीमित न रह जाए।

यह पंडित राम सहाय जी की गहन मनोवैज्ञानिक एवं कलात्मक सोच का ही परिचायक है कि उन्होंने अपने विशाल ज्ञान-कोष से प्रत्येक शिष्य को उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप शिक्षा दी। उनका उद्देश्य स्वयं की प्रतिकृति बनाना नहीं, अपितु बनारस घराने के पाँच सशक्त स्तंभों का निर्माण करना था, जिनमें से प्रत्येक स्तंभ घराने के एक विशिष्ट गुण का प्रतिनिधित्व करे। इसी कारण, उनकी शिष्य-परंपरा में हमें कला की अद्भुत विविधता दृष्टिगोचर होती है–

1. द्रुत लय और तैयारी का स्तंभ : पंडित अनोखेलाल मिश्र जी की परंपरा में हमें द्रुत लय की प्रस्तुति (जिसे 'तैयारी' भी कहा जाता है) की अवधारणा प्रमुखता से मिलती है। पंडित राम सहाय जी ने अपने शिष्य की इस स्वाभाविक क्षमता को पहचाना और उन्हें ऐसी रचनाएँ और तकनीकें प्रदान कीं जिनसे उनकी द्रुत लयकारी की क्षमता और भी निखर सके। यह शाखा घराने के ओज और चमत्कारपूर्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है।
2. लयकारी और बंदिशों का स्तंभ : पंडित किशन महाराज जी की परंपरा में हमें लय एवं पारंपरिक रचनाओं ('बंदिशों') की गहन और शास्त्रसम्मत अभिव्यक्ति मिलती है। यह इस बात का प्रमाण है कि उनके पूर्वजों को ऐसी दीक्षा मिली जिसमें लयकारी की जटिलता, गणितीय सौंदर्य और पारंपरिक रचनाओं की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया गया। यह शाखा घराने की बौद्धिकता, गहराई और पारंपरिकता का प्रतिनिधित्व करती है।
3. वीर रस और भाव का स्तंभ : पंडित सामता प्रसाद जी की परंपरा में वीर रस का प्रभाव विशेष रूप से प्रकट होता है, जो बनारस के पखावज-अंग का प्रत्यक्ष प्रभाव है। उन्हें ऐसी शिक्षा दी गई जिससे वे तबले के माध्यम से एक शक्तिशाली और नाटकीय वातावरण का निर्माण कर सकें। यह शाखा घराने की शक्ति, भव्यता और भावपूर्ण अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

पंडित राम सहाय जी ने अपनी दूरदृष्टि से सुनिश्चित किया कि यह घराना किसी एक ही भाव या शैली में बंधकर न रह जाए। उनकी इस विविध दीक्षा-प्रणाली के कारण ही बनारस घराना द्रुत लय की तैयारी, लयकारी का गहन विस्तार, और वीर रस की शक्तिशाली प्रस्तुति, इन तीनों ही क्षेत्रों में समान अधिकार रखता है। उनकी यह सोच एक ऐसी विशाल नदी के निर्माण के समान थी जिसमें अनेक धाराएँ आकर मिलती हैं, न कि एक संकीर्ण नहर के निर्माण की तरह। यही कारण है कि यह घराना आज भी इतना जीवंत, व्यापक और प्रासंगिक है।

वीर रस की अभिव्यक्ति

बनारस या काशी की भूमि शुरू से ही संतों की भूमि कहलाई और हिंदुओं के धार्मिक आस्था का केंद्र स्थान रहा है। ऐसे संगीत में तबले से पहले पखावज का ही प्रयोग किया जाता रहा और उसका प्रभाव वहां के तबले पर भी दिखता है। इसीलिए बनारस का बाज खुला है और उसमें शक्तिशाली के बजाय जोरदार बोलों का प्रयोग होता है, जैसे- धुमकिट तक, धड़ान, तड़ान, कड़ान। 'थाप' की विशिष्ट तकनीक भी पखावज से आई है, जो इसका मूल गुणधर्म है। लयकारी में स्पष्टता और ऊर्जा

के लिए बनारस घराने की मुख्य विशेषताओं में 'बांट' है, जिसमें एक ही अक्षर को लेके उसकी लयकारी अलग-अलग आड़, कुवाड़, बिहाड़ में दिखलाते हैं।

जहाँ मानवीय संवेदना और भाषा होती है, वहां रसोत्पत्ति हो सकती है। तबले पर भाव की अभिव्यक्ति हो सकती है, लेकिन रसोत्पत्ति के लिए साहित्य का आधार जरूरी है। (शर्मा 107) बनारस घराने की मौलिक विशेषताओं में 'श्लोक परन' या 'स्तुति परन' हैं, जहाँ देवी-देवताओं का स्मरण करते हुए वादन होता है। चूँकि वहां साहित्य का आधार है, इसलिए बनारस घराने में भाव की अभिव्यक्ति के साथ-साथ रसोत्पत्ति की भी संभावना उजागर हो जाती है।

श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति

बनारस घराने की वादन शैली में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति, उसकी ओजपूर्ण प्रस्तुतियों जितनी ही गहन और विशिष्ट है। यह रस कुछ ऐसी विशेष रचनाओं के माध्यम से प्रकट होता है जो घराने के काव्यात्मक सौंदर्य-बोध का परिचय देती हैं।

एकल वादन के प्रारंभ में जब 'औचार' को सौंदर्य-पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने का ध्येय हो, तो उसमें कोमलता एवं मधुरता का भाव स्वतः ही प्रकट होता है। इस प्रकार यह रचना श्रृंगार रस के लिए एक सुंदर पीठिका तैयार करती है।

यद्यपि कायदा, गत और टुकड़ा जैसी रचनाएँ सभी घरानों में प्रचलित हैं, बनारस अपनी कुछ अनूठी रचनाओं द्वारा श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति करता है। इनमें 'जनाना गत' एवं 'फ़र्द' का स्थान सर्वोपरि है, जिन्हें इस घराने की काव्यात्मक सौंदर्य की धरोहर माना जाता है।

'जनाना गत', जिसका नामकरण भ्रामक हो सकता है, का संबंध स्त्री-सुलभ भावों से नहीं, अपितु इसके कलात्मक चरित्र से है। यह गत अपने विशिष्ट लालित्य, नाजुक लयकारी, और काव्यात्मक सौंदर्य के लिए जानी जाती है। (मिश्र 45) यह रचना कोमलता और मधुरता का एक ऐसा भाव प्रस्तुत करती है जो श्रृंगार रस के सौंदर्य पक्ष को उत्कृष्टता से प्रकट करता है।

'फ़र्द' इस घराने की एक ऐसी अद्वितीय रचना है जिसमें वीर रस और श्रृंगार रस, दोनों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। जब फ़र्द को कोमलता और मधुर नाद-सौंदर्य के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो इसकी जटिल लयकारी एक बौद्धिक चुनौती के बजाय एक कलात्मक अलंकार या आभूषण की तरह प्रतीत होती है, जो श्रृंगार रस के भाव को उत्कृष्टता से प्रकट करती है।

इस शोध-पत्र में विभिन्न रचनाओं (जैसे परन, गत, फर्द) का विश्लेषण करते समय उनके संपूर्ण शास्त्रीय स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है। रचनाओं के प्रत्यक्ष अंकन के स्थान पर, उनके चरित्र, संरचना, लयकारी के स्वरूप, और भाव-निष्पत्ति में उनकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि विवेचन सुबोध और विषय-केंद्रित रहे।

आधुनिक सौंदर्यबोध और अभिव्यक्ति

आधुनिकता की परिभाषा

तबला वादन में 'आधुनिकता' का अर्थ पारंपरिक रचनाओं का त्याग नहीं, अपितु उनकी प्रस्तुति में एक नवीन सौंदर्य-चेतना का समावेश है। यह आधुनिकता वादन में बढ़ती हुई सूक्ष्मता और नाद-सौंदर्य पर विशेष रूप से केंद्रित है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण बनारस घराने के 'औचार' वादन में देखा जा सकता है।

उदहारण के तौर पर, जब कलाकार 'त्रक धीना ना धीधीना' जैसे अक्षर औचार में बजाता है, तो आधुनिक विचार केवल शब्दाक्षरों के शुद्ध उच्चारण तक सीमित नहीं रहता। बल्कि, इसमें यह चिंतन समाहित होता है कि बाएँ तबले पर कितना वज़न दिया जाए जिससे ध्वनि का सौंदर्य निखरे, और वह केवल एक शब्द मात्र न रह जाए। इस प्रकार, ध्वनि के उतार-चढ़ाव अर्थात उसके ऊँचे और नीचेपन के विवेकपूर्ण प्रयोग से प्रस्तुति में एक नई गहराई उत्पन्न होती है, और यही आधुनिकता का विचार है। (Sen 71) बनारस घराने में इस प्रकार के आधुनिक सौंदर्य-बोध का श्रेय पंडित किशन महाराज जी को दिया जाता है।

सूक्ष्म वादन-शैली के तत्व

आधुनिक सौंदर्य-बोध के विकास ने बनारस घराने की पारंपरिक शक्ति के साथ-साथ एक नई सूक्ष्मता को जन्म दिया है। यह सूक्ष्मता कुछ विशिष्ट तत्वों में परिलक्षित होती है जो कलाकार की गहन साधना और कलात्मक परिपक्वता को दर्शाते हैं।

- जटिल लयकारी का प्रयोग (जैसे 'बांट' में)।

  यह आधुनिक बनारस वादन की एक प्रमुख विशेषता है। कलाकार केवल द्रुत लय में वादन नहीं करते, बल्कि लय के भीतर अत्यंत जटिल और सूक्ष्म विभाजन प्रस्तुत करते हैं। इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण 'बांट' जैसी रचनाओं में मिलता है। 'बांट' का उद्देश्य ही लय के साथ विभिन्न प्रकार के विभाजन और नादाकृतियाँ बनाना है। कलाकार एक ही बांट को विभिन्न जटिल लयकारियों जैसे आड़, कुआड़, और बिआड़ में कुशलतापूर्वक विभाजित करके दिखाते हैं।

  इस प्रकार की लयकारी केवल गणितीय अभ्यास नहीं है, बल्कि यह कलाकार की लय पर असाधारण बौद्धिक और कलात्मक पकड़ को दर्शाती है। यह प्रस्तुति में एक ऐसी गहराई और जटिलता लाती है जो श्रोताओं को चकित कर देती है।

- वादन में कोमलता और मधुरता पर ध्यान केंद्रित करना।

शक्तिशाली और जोरदार बोलों के लिए प्रसिद्ध होने के बावजूद, बनारस घराने के आधुनिक कलाकार कोमलता और मधुरता पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इसका संबंध नाद-सौंदर्य से है। कलाकार हर बोल को इस प्रकार साधते हैं कि उसमें कर्कशता के स्थान पर एक मधुर गूँज हो।

औचार जैसी रचनाओं में भी, जब सौंदर्य को महत्त्व दिया जाता है, तो कोमलता और मधुरता स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है। (Mainkar 77)

यह कोमलता विशेष रूप से श्रृंगार रस या शांत रस की अभिव्यक्ति में सहायक होती है। कलाकार बाएँ (डग्गा) के नियंत्रित वज़न और दाएँ (तबला) की मधुर ध्वनि के माध्यम से एक शांत और भावपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हैं, जो घराने की बहुमुखी क्षमता का प्रमाण है।

कलाकार की दोहरी भूमिकाः परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य

बनारस घराने की परंपरा का प्रवाह निरंतर बना हुआ है, क्योंकि यह एक जीवंत और विकासशील परंपरा है। इस जीवंतता का रहस्य समकालीन कलाकार द्वारा निभाई जाने वाली दोहरी भूमिका में निहित है। आज का कलाकार केवल एक वाहक नहीं, अपितु अतीत और वर्तमान के मध्य एक सेतु है, जो परंपरा के संरक्षक और एक समकालीन प्रस्तोता, दोनों ही उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है।

1. परंपरा के संरक्षक एवं सर्जक के रूप में कलाकार

किसी भी घराने की परंपरा के अंतर्गत कलाकार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं द्वैध होती है। कलाकार का प्रथम और सर्वोपरि कर्तव्य अपनी गुरु-शिष्य परंपरा से प्राप्त ज्ञान को अक्षुण्ण रखना है, जिससे वह घराने की अमूल्य धरोहर का संरक्षक बनता है। यह संरक्षण तीन प्रमुख रूपों में प्रकट होता है–

- रचनाओं की शुद्धता, जिसमें वह पारंपरिक बंदिशों को उनके मौलिक स्वरूप में साधता है;
- शैलीगत निष्ठा, जिसके अंतर्गत वह बनारस बाज़ के मूल तत्वों (जैसे खुले बोल, 'थाप') को अपनी कला का आधार बनाता है; और
- मर्यादा का पालन, जिसमें वह घराने की "भाषा" और सौंदर्य-बोध का अतिक्रमण नहीं होने देता।

किंतु, कलाकार की भूमिका केवल संरक्षण तक ही सीमित नहीं है। कई वर्षों की सतत साधना और अपने चिंतन-मनन से जब कलाकार परिपक्व होता है, तो उसमें गुरुओं से प्राप्त रचनाओं से प्रेरित होकर अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति जोड़ने की स्वाभाविक इच्छा जागृत होती है। एक सच्चा कलाकार इसी बिंदु पर अपनी संरक्षक की भूमिका का निर्वहन करता है। वह नवीन विचारों और रचनाओं का योगदान करते समय घराने की भाषा, छंद और वर्णों की मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखता है। इस प्रकार, जब नए कलाकार इस अनुशासित ढंग से अपना योगदान देते हैं, तो परंपरा का प्रवाह निरंतर बना रहता है और वह समृद्ध एवं विकसित होती जाती है। अतः, कलाकार का यह द्वैध उत्तरदायित्व ही परंपरा को प्रामाणिकता, गहराई और समकालीन जीवंतता प्रदान करता है।

2. समकालीन प्रस्तुतकर्ता के रूप में कलाकार

परंपरा की नींव पर खड़ा होकर, कलाकार अपनी समकालीन चेतना और सौंदर्य-दृष्टि से उस परंपरा को वर्तमान समय के लिए प्रासंगिक बनाता है। इस भूमिका में वह एक प्रस्तोता, विचारक और सर्जक होता है–

- **अभिव्यक्ति में सूक्ष्मताः** आधुनिक कलाकार केवल बोलों की पुनरावृत्ति नहीं करता, बल्कि उनके भीतर छिपे सौंदर्य को प्रकट करता है। जैसा कि पंडित किशन महाराज जी ने 'औचार' जैसी रचनाओं में दर्शाया, बाएँ तबले पर वज़न का सूक्ष्म प्रयोग करके ध्वनि के ऊँचे और नीचेपन से एक नवीन सौंदर्य का विचार प्रस्तुत किया गया। यह 'निकास' या प्रस्तुति का नया तरीका है जो आधुनिक सौंदर्य-बोध का परिचायक है।
- **चिंतन-मनन द्वारा नवीनताः** कलाकार अपने चिंतन-मनन के आधार पर पारंपरिक रचनाओं में गणितीय सौंदर्य और भाषा सौंदर्य का एक समग्र विचार सम्मिलित करता है। वह अतीत से सीखता है, वर्तमान में जीता है, और भविष्य की कल्पना करते हुए कला को आगे बढ़ाता है।
- **रचनात्मकता और प्रयोगः** यह जानते हुए कि "आवश्यकता आविष्कार की जननी है," कलाकार अपनी परंपरा को शिथिल होने से बचाने के लिए नए-नए प्रयोग करता है। इसका उदाहरण गुरु जी द्वारा लखनऊ के 'टुकड़े' के प्रतिउत्तर में एक नवीन टुकड़े की रचना करना है, जिसमें आधुनिकता का समन्वय स्पष्ट दिखता है।

निष्कर्ष

यह शोध-प्रबंध बनारस तबला घराने की एकल वादन परंपरा में परंपरा और आधुनिकता के मध्य सामंजस्य की प्रक्रिया का विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया। अध्ययन ने स्थापित किया कि इस घराने की पारंपरिक नींव काशी की आध्यात्मिक भूमि और प्राचीन पखावज-वादन की ओजपूर्ण परंपरा में निहित है, जो परन, पड़ाल, और रेला जैसी रचनाओं के माध्यम से वीर रस की प्रभावशाली अभिव्यक्ति करती है। इसके साथ ही, शोध ने यह भी प्रदर्शित किया कि घराने की आधुनिक सौंदर्य-चेतना सूक्ष्मता, नाद-सौंदर्य, और लयकारी की जटिलता पर केंद्रित है, जिससे औचार, जनाना गत, और फ़र्द जैसी रचनाओं द्वारा श्रृंगार रस जैसे कोमल भावों का प्रकटीकरण संभव होता है। इस शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि बनारस घराना इन दोनों शैलियों के मध्य संतुलन एक संश्लेषण के माध्यम से स्थापित करता है, जहाँ आधुनिक तकनीकें पारंपरिक शक्ति को परिष्कृत करती हैं, और परंपरा का वज़न आधुनिक प्रस्तुति को गहराई प्रदान करता है।

यह सामंजस्य दर्शाता है कि बनारस घराना केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं, अपितु एक जीवंत एवं विकासशील परंपरा है। इस परंपरा की जीवंतता का श्रेय समकालीन कलाकार को जाता है जो परंपरा के

संरक्षक और आधुनिक प्रस्तोता की दोहरी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन करता है। कलाकार अपनी कलात्मक विवेक-बुद्धि से अतीत के ओज और वर्तमान की कला-चेतना के मध्य एक सेतु का निर्माण करता है। अतः, परंपरा और आधुनिकता का यह समन्वय कोई विरोधाभास नहीं, बल्कि इस घराने की सबसे बड़ी शक्ति है, जो इसे निरंतर प्रासंगिक बनाए रखता है।

यह अध्ययन भविष्य में किए जाने वाले शोधों के लिए कुछ नवीन दिशाएं प्रस्तुत करता है। चूंकि बनारस घराना एक जीवंत परंपरा है, भविष्य में इससे जुड़ने वाले कलाकार, शिष्य, एवं विचारवंत शोधार्थी इसमें अपना योगदान देते रहेंगे, जिससे इसके अध्ययन के लिए नवीन क्षेत्र निरंतर उद्घाटित होते रहेंगे। अतः, परंपरा और आधुनिकता का यह समन्वय कोई विरोधाभास नहीं, बल्कि इस घराने की समकालीन शक्ति एवं प्रासंगिकता का मूल स्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Benares Gharana Lineage Chart and Tabla Player Biographies. Shawn Mativetsky, Tabla & Percussion, Montral, Qubec, Canada, shawnmativetsky.com/benares-gharana. Accessed 10 Sept. 2025.
2. Mainkar, Sudhir. Aesthetics of Tabla. Saraswati Publication
3. Sen, Arun K. Indian Concept of Rhythm. Kanishka Publishers, 1994.
4. मिश्र, कामेश्वर नाथ, काशी की संगीत परंपरा एवं संगीतजगत् को काशी का योगदान, पहला संस्करण, लुमिनस् बुक्स, 2018.
5. मिश्र, विजयशंकर, तबला पुराण, दूसरा संस्करण, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2012.
6. मिस्त्री, आबान, पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, दूसरा संस्करण, स्वर साधना समिति, 2000.
7. शर्मा, स्वतंत्र, सौन्दर्य, रस एवं संगीत, दूसरा संस्करण, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, 2015.